



## दक्षिण पूर्व एशिया एवं भारत की वाणिज्यिक स्थिति

अनुप्रिया

शोधार्थिनी

विषय - अर्थशास्त्र

बयालसी पी.जी.कालेज जलालपुर जौनपुर ( उत्तर प्रदेश )

किसी भी देश की प्रगति उसके व्यापार पर निर्भर करती है इस दृष्टि से भारत ने प्राचीन काल से ही व्यापार के क्षेत्र में बहुत उन्नति की थी जिसके कारण वह विश्व का एक प्रमुख देश बन गया था। यहाँ की उर्वरा भूमि उपयुक्त जलवायु और प्राकृतिक साधनों की प्रचुरता ने इसमें अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया। "यहाँ के लोग भी बड़े परिश्रमी और साहसी थे जिन्होंने अनेक कठिनाइयों का सामना करते हुए अपना व्यापार न केवल भारतवर्ष तक सीमित रखा अपितु उसे विश्व के अन्य देशों में भी फैलाया। इस प्रकार अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार की नींव पड़ी। प्रारम्भ में तो यह व्यापार वस्तु विनिमय प्रणाली पर आधारित था किन्तु कालान्तर में उसकी आवश्यकताएं बढ़ती गईं तो मुद्रा प्रणाली का विकास हुआ जिसके परिणामस्वरूप आन्तरिक तथा विदेशी व्यापार में प्रगति हुई।

दक्षिण-पूर्वी एशिया के साथ भारत के व्यापारिक सम्बन्धों का प्रारम्भ छठी शताब्दी ई० पूर्व में हुआ। कालान्तर में दक्षिण-पूर्वी एशिया के साथ भारत के सम्बन्ध विशेष रूप से बढ़े। दक्षिणी पूर्वी एशिया के साथ व्यापारिक सम्बन्धों की पुष्टि कालिदास के ग्रन्थों से भी होती है।

इस प्रकार हम देखते हैं कि प्राचीन भारतीय इतिहास में दक्षिण पूर्वी एशिया के साथ भारत के व्यापारिक सम्बन्ध बहुत महत्वपूर्ण थे। "भारत के सुदूरपूर्व के इन देशों के साथ व्यापारिक एवं सांस्कृतिक सम्बन्ध इतने प्रगाढ़ थे कि इन्हें (वशुत्तर भारत की संज्ञा दी गई।"<sup>2</sup>

भारत दक्षिण-पूर्वी एशिया के देशों के साथ अच्छे पड़ोसियों के संबंध विकसित करने को बहुत महत्व देता है। 1991 से भारतीय राजनय की नीति 'पूर्व की ओर देखो' की रही है। इसमें भी विशेष ध्यान दक्षिण-पूर्वी एशियाई राष्ट्रों के संघ 'आसियान' के साथ संबंधों को सुधारने और साथ ही व्यापार निवेश, पर्यटन विज्ञान और प्रौद्योगिकी के संबंधों को बढ़ावा देने पर रहा है। उपनिवेशकाल में जो ऐतिहासिक और सांस्कृतिक संबंध खराब हो गए थे उन्हें पुनर्जीवित करने की भारतीय नीतियों आरम्भ की गईं। अतीत में शीत युद्ध की स्थिति ने द्विपक्षीय संबंधों के मामले में भारत को किसी



प्रकार की कार्रवाई करने से रोके रखा। लेकिन शीत युद्ध समाप्त होने के बाद परिस्थिति बदल गई है। हमारे आर्थिक, सांस्कृतिक और सामरिक संपर्कों को पुनर्जीवित करने के लिए कई प्रकार की पहल की गई। आसियान देशों के साथ सकल द्विपक्षीय व्यापार में 1998-99 में 5.98 अरब डॉलर से 2002-2003 में 7.98 अरब डॉलर की वृद्धि हुई है। इससे भविष्य में पर्याप्त वृद्धि की संभावना दिखाई देती है।

दक्षिण पूर्वी एशियाई क्षेत्र को प्राकृतिक संसाधनों की अकूत धन-सम्पदा प्राप्त है। यह क्षेत्र विश्व के प्राकृतिक रबर का 90 प्रतिशत, टिन का 50 प्रतिशत, विश्व के नारियल का 75 प्रतिशत पाम ऑयल का 55 प्रतिशत और टंगस्टन का 20 प्रतिशत उत्पादन करता है। इण्डोनेशिया और फिलीपीन्स में सोने की खाने और वर्मा (म्यांमार) तथा कम्बोडिया में रूबी की खाने हैं। दक्षिण पूर्वी एशिया कम्बोडिया में रूबी की खाने हैं। दक्षिण पूर्वी एशिया में सभी जगहों पर इमारती लकड़ी और अन्य कठोर लकड़ी उपलब्ध हैं। इण्डोनेशिया, विएतनाम, मलेशिया, वर्मा और दक्षिणी चीन के समुद्र में तेल के भण्डार हैं।

दक्षिणी-पूर्वी एशिया के देशों की भूमि बहुत उपजाऊ है। इस क्षेत्र में चावल, गन्ना, मक्का, पपीता और केले की भरपूर फसल होती है। यह क्षेत्र महत्वपूर्ण मछली-पालन क्षेत्र है। यहाँ की मृदा प्रायः जलोढ़ है और यहाँ की जलवायु उष्णकटिबंधी है। इस क्षेत्र की प्रकृति स्वभाव से उर्वर है। यहाँ तक कि पहाड़ों की चोटियों पर भी सब्जियाँ उगायी जा सकती हैं।

शीत युद्ध के दौरान आसियान देशों से निवेश बहुत कम था। उसमें धीरे-धीरे वृद्धि हो रही है तथा दोनों ही ओर से विश्वास दिखाई देने लगा है। पर्यटन को बढ़ावा देने के लिए विभिन्न पैकेज आरम्भ किए गए थे। अब पर्यटन का क्षेत्र केवल बोधगया के बौद्धों के आर्थिक स्थलों तक सीमित नहीं रह गया है। भारत आसियान क्षेत्र के देशों से निवेश को आकर्षित करना चाहता है और वे उदारीकरण तथा मुक्त व्यापार के पक्ष में हैं। आसियान देश भारत की सद्भावना के बदले यहाँ से व्यापार में रुचि लेने को तैयार है। वे भारत के विशाल बाजार के महत्त्व को समझते हैं क्योंकि भारत में लाखों मध्यम वर्ग के लोग विद्यमान हैं। इसके अतिरिक्त उनके भारत के साथ समान ऐतिहासिक धार्मिक और सुरक्षा संबंधी हित हैं। दोनों ही पक्ष और अधिक लोकतंत्रीकरण, उदारीकरण और मुक्त व्यापार की नीति के समर्थक हैं। दोनों उग्रवाद और आतंकवाद के विरोधी हैं। साथ ही दोनों उग्रवाद और आतंकवाद के विरोधी हैं। साथ ही दोनों, मानव अधिकारों का सार्वभौम रूप से आदर करने के पक्ष में भी हैं।

भारत और आसियान देशों का उपनिवेशीकरण और वि-उपनिवेशीकरण का इतिहास लगभग एकसमान है। यूरोप के उपनिवेशीवादी देशों में आसियान और भारत के विभिन्न



क्षेत्रों पर कब्जा करने की होड़ सी लगी हुई थी। इंग्लैण्ड ने भारतवर्मा, मलाया, श्रीलंका, सिंगापुर, और ब्रुनेई को अपना उपनिवेश बनाया, इन इच लोगो के इंडोनेशिया को अपना उपनिवेश बनाया और फ्रांसीसी शासकों ने विएतनाम, लाओस, कम्बोडिया को अपना उपनिवेश बनाया जिन्हें हिन्द-चीन के नाम से जाना जाता था। बाद में स्पेन (और अमेरिका ने फिलीपीन्स को अपना उपनिवेश बनाया। शताब्दियों के उपनिवेशीकरण के बाद उपनिवेश विरोधी संघर्ष आरम्भ हुआ।

दक्षिण-पूर्व एशिया के बड़े भूभाग को भारतीय उपमहाद्वीप का हिस्सा समझा जाता था जिस पर उन्होंने मनमाने ढंग से कब्जा कर लिया था। भारतीय लोगों को यह समझाया गया कि यदि उपनिवेशीकरण समाप्त हो गया तो बहुत से भारत से अलग हुए हिस्से फिर से भारत में मिल जाएंगे। एकता बनाए रखने की इच्छा के बावजूद भारत का विभाजन हो गया और माउंटबेटन योजना के अन्तर्गत इसे अपने पश्चिमी और पूर्वी क्षेत्र का बहुत-सा भाग खोना पड़ा। इन दोनों हिस्सों को मिलाकर पाकिस्तान कहा गया, जो बाद में 1971 में और विभाजित होकर दो राज्यों में परिवर्तित हो गया। इन दोनों राज्यों को पाकिस्तान और बांग्लादेश नाम दिया गया।

दक्षिण पूर्वी एशियाई देशों के संघ आसियान का जन्म 1967 में हुआ था। इसका उद्देश्य क्षेत्रीय व्यापार निवेश और संयुक्त उद्यमों को बढ़ावा देना था। यह क्षेत्रीय सहयोग का केन्द्र बिन्दु सिद्ध हुआ और इसमें काफी तेजी आई। अब यह नए बाजारों और निवेश के अवसरों की खोज में लग गया। इसने भारत और वियतनाम को क्षेत्रीय राजनीतिक तथा सुरक्षा परिदृश्य को सशक्त बनाने की दृष्टि से पूरक के रूप में देखा। विएतनाम ने उदारीकरण निजीकरण और भूमण्डलीय करण के उद्देश्य से पुनर्नवीकरण की प्रक्रिया आरम्भ की। दूसरी ओर भारत ने 1991 में प्रधानमंत्री पी०वी० नरसिम्हाराव और वित्तमंत्री मनमोहन सिंह के नेतृत्व में आर्थिक उदारीकरण की नीति को स्वीकार किया। भारत में नई सरकार ने स्त्री उदारीकरण की नीति को स्वीकार किया। भारत में नई सरकार ने भी उदारीकरण, निजीकरण, और भूमंडलीकरण की प्रक्रिया को जारी रखा। भारत ने विदेशी निवेशकों के लिए करमुक्त प्रोत्साहन की घोषणा भी की। इन नीतियों ने आसियान देशों को भारत के साथ सहयोग को और दृढ़ करने के लिए प्रोत्साहित किया है।

आसियान ने 1992 में भारत को क्षेत्रीय वार्ता सहभागिता की पेशकश की। तदनुसार व्यापार, निवेश, पर्यटन विज्ञान और प्रौद्योगिकी के इन चार आधारभूत सहयोग के क्षेत्रों की पहचान की गई। यह क्षेत्रीय सहभागिता इतनी उपयोगी सिद्ध हुई कि आसियान ने दो वर्षों के भीतर 1995 में इस वार्ता को पूर्ण वार्ता का दर्जा दे दिया। इससे आर्थिक सुरक्षा और राजनीतिक दृष्टि से विभिन्न क्षेत्रों में संबंधों को बढ़ाने में सुविधा हुई। आसियान ने भारत को आसियान के मंत्री स्तर के बाद के सम्मेलन में और आसियान



क्षेत्रीय मंच (Asean Regional Forum-ARF) में तथा आसियान के सुरक्षा मंच में आमन्त्रित किया। बाद में भारत और आसियान ने परस्पर आपसी हितों के बारे में बातचीत आरम्भ की।

सहयोग के विभिन्न क्षेत्रों को पर्याप्त विस्तार देने के लिए और सांस्थानिक प्रक्रिया के रूप में कार्य करने के लिए आसियान-भारत सहयोग समिति की स्थापना की गई। साथ ही, विज्ञान और प्रौद्योगिकी, व्यापार और निवेश, मानव संसाधन विकास और संस्कृति में सहयोग के क्षेत्रों की पहचान के लिए आसियान और भारत के एक कार्य-दल की भी स्थापना की गई। इन देशों की संयुक्त सहयोग समिति ने विज्ञान और प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में (विशेष रूप से जैव प्रौद्योगिकी और सूचना प्रौद्योगिकी (आई०टी० में) भारत की विशेषज्ञता की पहचान की। इसके अतिरिक्त खाद्य प्रसंस्करण, स्वास्थ्य रक्षा, कृषि इंजीनियरी, इलेक्ट्रानिकी संचार, सेवा क्षेत्र में सहयोग के लिए भी प्रस्ताव पेश किए गए।

आसियान-भारत सहयोग समिति की बैठक ने व्यापार पूँजी निवेश, पर्यटन, कम्प्यूटर प्रौद्योगिकी सौर ऊर्जा और पर्यावरण सुरक्षा के क्षेत्रों में सहयोग को बढ़ाने के लिए भारत-आसियान निधि स्थापित करने का निर्णय किया। यह निधि आसियान सचिवालय के अधिकार में रखी गई। इसकी व्यवस्था संयुक्त प्रबंध समिति द्वारा की जाती थी। संयुक्त सहयोग समिति इस बात के लिए सहमत थी। कि एक आसियान नई दिल्ली समिति गठित की जाए जिसमें आसियान देशों के राजनयिक मिशनों के अध्यक्ष शामिल होंगे। भारत के तत्कालीन विदेश सचिव जे०एन० दीक्षित ने एक छात्रवृत्ति योजना घोषित की जिसके अन्तर्गत प्रत्येक देश विज्ञान और प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में छह माह की छह डॉक्टर डिग्री के बाद की फेलोशिप के प्रस्ताव भेज सकता है। भारत और आसियान क्षेत्र ने उच्च योग्यता प्राप्त प्रतिष्ठित विद्वानों की भाषणमालाएँ शुरू की जिसके अन्तर्गत आसियान के प्रमुख नेताओं और बुद्धिजीवियों द्वारा भारत में तथा भारतीय नेताओं और बुद्धिजीवियों द्वारा आसियान देशों में भाषण दिए गए। यह योजना विदेशनीति और आसियान देशों तथा वार्ता के सहयोगियों के बीच विश्वास और आपसी समझ बढ़ाने में सहायक सिद्ध हुई।

आसियान के साथ सहयोग में मुख्य बल आर्थिक पक्ष पर है भारत की आबादी एक अरब से अधिक है जिसका प्रमुख हिस्सा मध्यम वर्ग का है। चूँकि कई दशकों से भारत का विश्वास समाजवादी विचारधारा और राष्ट्रीयकरण में रहा है, इसलिए इसके आसियान देशों के साथ संबंध रहे हैं। 1991-92 में जब भारत ने उदारीकरण की नीति को अपनाया तब आसियान देशों को भारत से केवल छह प्रतिशत का निर्यात होता था। जो आसियान के विश्व-व्यापार के एक प्रतिशत से भी कम था। शीत युद्ध काल के बाद स्थिति में परिवर्तन आना शुरू हुआ। सूचना प्रौद्योगिकी (आई०टी०) साफ्टवेयर लघु



और मध्यम उद्यम तथा ढांचागत विकास, विशेष रूप से विद्युत उत्पादन, परिवहन और निर्माण के क्षेत्रों में भारत की विशेषज्ञता की सराहना हुई। दक्षिण-पूर्व एशिया की क्षेत्रीय सीमाओं के कुछ क्षेत्रों को वृद्धि क्षेत्र के अंतर्गत योजना में शामिल कर लिया गया। इनमें अण्डमान और भारत के उत्तर-पूर्वी भाग भी सम्मिलित थे। यद्यपि अभी तक इन प्रस्तावों को कार्यान्वित नहीं किया जा सका है, लेकिन भविष्य में सहयोग की संभावनाओं को कार्यक्षम बनाया जा रहा है।

भारत और आसियान के बीच व्यापार की कुल विक्री से और बढ़ते हुए निवेश से आपसी विश्वास की झलक मिलती है तथा घनिष्ठ सहभागिता की और अधिक गुंजाइश दिखाई देती है। भारत थाईलैंड को मणि, रत्न, हीरे, कपास और कपड़ा, यूरिया और उर्वरक आदि का निर्यात करता है तथा थाईलैंड से दालों (उड़द और मूंग) रबर कार्बनिक तथा अकार्बनिक रसायनों का आयात करता है। 1994 में भारत और मलेशिया के बीच 77.2 करोड़ डॉलर का द्विपक्षीय व्यापार था, जो अब बढ़कर एक अरब डॉलर से अधिक हो गया है। भारत मलेशिया से पाम ऑयल, पेट्रोल, अपरिष्कृत रबर और गैर लौह धातुओं का आयात करता है तथा इंजीनियरी सामान, भवन निर्माण सामग्री, कपड़े धागे रसायन, औषध निर्माण प्रौद्योगिकी, शीरे फलों और सब्जियों का निर्यात करता है।

सिंगापुर के साथ भारत का व्यापार जो पहले 4.4 करोड़ डॉलर था, वह 1992 में बढ़कर 1.5 अरब डॉलर हो गया जिसकी वार्षिक वृद्धि दर 10 प्रतिशत है। भारत सिंगापुर से इंजीनियरी सामान, तेल (निकालने में काम आने वाली) रिंगें पाम तेल कार्बनिक रसायन शीशे और संचार के उपकरणों का आयात करता है और कपड़ा मसाले चारा, अकार्बनिक रसायन, जूट फलों और सब्जियों का निर्यात करता है।

इण्डोनेशिया, फिलीपीन्स, विएतनाम लाओस और कंबोडिया के व्यापार संबंधी आँकड़ों में भी वृद्धि की प्रवृत्ति दिखाई देती है। भारत और वर्मा के बीच तामू-मोरिह सीमा के खुल जाने के बाद से वर्मा भी भारत का एक उभरता हुआ प्रमुख व्यापारिक सहभागी बन रहा है। भारत वर्मा के सैनिक शासन के साथ रचनात्मक सहयोग की नीति पर चल रहा है। भारत वर्मा को आसियान देशों के साथ व्यापार के लिए महत्वपूर्ण प्रवेश द्वार मान्यता है।

भारत और वर्मा ने 20 मई 2001 को तामू-कालेग्यो-कलेवा सड़क के रख-रखाव के लिए समझौते (एम०ओ०यू०) पर हस्ताक्षर किए। भारत और वर्मा के बीच सहयोग के अन्य क्षेत्र में शामिल हैं- सिट्टवे बन्दरगाह के उन्नयन से संबंधित बहुविध परिवहन परियोजनाओं को पूरा करना, फालादान नदी में नौचालन की सुविधाओं का विकास करना और वर्मा में कलेवा से भारत वर्मा सीमा पर मिजोरम तक राजमार्ग का विकास करना। भावी सहयोग के क्षेत्रों में सम्मिलित हैं- ऊर्जा से संबंधित परियोजनाएँ जिनमें सौर ऊर्जा जीवाश्म ईंधन और जल विद्युत ऊर्जा प्रमुख हैं।



भारत का 1996-97 में वर्मा के साथ व्यापार 77 लाख डॉलर, इंडोनेशिया के साथ 1 अरब 18 करोड़ 6 लाख डॉलर और मलेशिया के साथ 1 अरब 54 करोड़ 4 लाख डॉलर था। आसियान क्षेत्र को भारत से निर्यात मुख्य रूप से जानवरों का आहार, रूई, चावल, मूँगफली, कृत्रिम रेशा मशीने और जैव रसायन का था। इस क्षेत्र में मोटर उद्योग के हिस्सों (आटो पार्ट्स) इलेक्ट्रानिकी के हिस्सों, रेल के उपस्करों, कम्प्यूटर और साफ्टवेयर कृत्रिम रेशों के वस्त्रों और कार्बनिक उत्पादों के व्यापार की बहुत संभावनाएँ हैं। इस क्षेत्र में भारत के इस्पात, हर्बल उत्पादों वस्त्रों और धागे की बहुत मांग है।

लाओस के साथ द्विपक्षीय व्यापार 1996 के 1.3 करोड़ रुपये से बढ़कर 1998 में 2.9 करोड़ रूपए हो गया। कई भारतीय कंपनियों ने लाओस के बाजार में अपने उत्पादों की खपत की संभावनाओं का आकलन किया। इन कंपनियों में प्रमुख थी किलोस्कर, टाटा, बी०एच०ई०एल० 1 किलोस्कर ने 1998 में 3 करोड़ डॉलर के सिचाई के उपयोग के पंपों का निर्यात किया। वियतनाम के साथ द्विपक्षीय व्यापार में 1996-97 के 428.2 करोड़ रूपयों की अपेक्षा 2.5 प्रतिशत की थोड़ी सी वृद्धि दर्ज की गई। जहाँ तक इंडोनेशिया का संबंध है, द्विपक्षीय व्यापार 1996 के 4226.2 करोड़ की तुलना में 4330.3 करोड़ रूपये हुआ। लेकिन फिलीपीन्स के साथ व्यापार में 1998 में पहले की अपेक्षा कमी आई। फिलीपीन्स के साथ भारत का निर्यात पहले के 9 करोड़ डॉलर से 1996-97 में 31.36 प्रतिशत घट गया।

### संदर्भ ग्रंथ सूची

1-दक्षिण पूर्व एशिया के साथ भारत के व्यापारिक संबंध-डॉ० निशा सिंह प्रथम संस्करण 2014 सत्यम पब्लिशिंग हाउस नई दिल्ली 110059 पृष्ठ संख्या ,08 ।

2-दक्षिण पूर्व एशिया के साथ भारत के व्यापारिक सम्बन्ध डॉ० निशा सिंह सत्यम पब्लिशिंग हाउस नई दिल्ली-110059 पृष्ठ सं० 13.

3. मजूमदार, आर. सी. (R. C. Majumdar), *प्राचीन भारत में दक्षिण-पूर्व एशिया के साथ सांस्कृतिक एवं व्यापारिक सम्बन्ध*, दिल्ली: मोतीलाल बनारसीदास, विभिन्न संस्करण।

4. सरकार, बी. एन. (B. N. Sarkar), *India and Southeast Asia: Trade and Cultural Contacts*, नई दिल्ली: मुंशीराम मनोहरलाल, 1985.

5. कोडेस, जॉर्ज (George Coedès), *The Indianized States of Southeast Asia*, होनोलूलू: University of Hawaii Press, 1968.



6. हॉल, डी. जी. ई. (D. G. E. Hall), *A History of South-East Asia*, लंदन: Macmillan, revised edition, 1981.

7. पाठक, वी. एस. (V. S. Pathak), *Ancient Historians of India and Trade Relations with Southeast Asia*, वाराणसी: भारतीय विद्या प्रकाशन, 1977.

8. मुखर्जी, राधाकुमुद, *Indian Shipping: A History of the Sea-borne Trade and Maritime Activity of the Indians from the Earliest Times*, नई दिल्ली: Oriental Books Reprint Corporation, 1962.

9. शर्मा, रामशरण, *प्राचीन भारत का आर्थिक और सामाजिक इतिहास*, नई दिल्ली: ओरिएंट ब्लैकस्वान, विभिन्न संस्करण।

10. थापर, रोमिला, *प्राचीन भारत*, नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन / Penguin, विभिन्न संस्करण।